Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

आत्मकथा: हिन्दी साहित्य में आत्मकथा का उद्भव और विकास

Pankaj Kumar Singh[1]*, Dr. Rajesh Kumar Niranjan[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - ***'साहित्य समाज का दर्पण है', लेकिन दलित साहित्य के सन्दर्भ में इस सिद्धान्त की परिणति व्यावहारिक रूप में नहीं हुई। दलित समाज जितना उपेक्षित रहा, उतना साहित्य भी। दलित समाज और साहित्य ने अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए निरन्तर संघर्ष किया है, तथा इसी अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए दलित साहित्य प्रतिबद्ध है। इतिहास इस बात का गवाह है, कि प्राचीनकाल से अब तक शोषण और उत्पीड़न सिर्फ शूद्र एवं पिछड़ी जातियों का ही हुआ है। भारतीय समाज सदियों से वर्ण-व्यवस्था की बेड़ियों में जकड़ा रहा तथा इस वर्ण-व्यवस्था की कलुषित मानसिकता ने मनुष्य-मनुष्य के बीच अलगाव पैदा कर भारतीय समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन वर्णों में बाँट दिया। इसी व्यवस्था के चलते सबसे निकृष्ट वर्ग को शिक्षा और ज्ञान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित कर दिया गया तथा उनकी धार्मिक अनुष्ठान एवं कार्यों में उपस्थिति निषिद्ध कर दी गई।***

कीवर्ड - ***आत्मकथा, हिन्दी साहित्य, विकास, दलित।***

----------X----------

परिचय

साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब झलकता है। समाज की तरह साहित्य भी गतिशील होता है तथा साहित्य, समाज में हो रहे परिवर्तन का साक्षी होता है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य पर गौर किया जाय तो यह प्रतीत होता है कि दलित चेतना और दलित विमर्श के दर्शन होते रहे हैं तथा आधुनिक काल में दलित विमर्श एक विचारधारा के रूप में उभर कर सामने आयी है। (1) आजकल दलित साहित्य का चारों ओर बोलबाला है। अब आवश्यकता इस बात की है कि दलित साहित्य का सन्देश आम जन तक पहुँचे क्योंकि भारतीय समाज का एक वर्ग ऐसा भी है, जिसको सदियों से उत्पीड़, अपमानित किया गया जिनके साथ पशुओं से बदतर व्यवहार किया गया और दूसरों की सेवा करना ही इनका धर्म निर्धारित किया गया। इनमें चेतना विकसित न हो इसलिए शिक्षा जैसे मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया। आज दलित वर्ग अपनी अस्मिता, सत्ता संघर्ष के साथ-साथ साहित्य और सांस्कृतिक संघर्ष के संकट से गुजर रहा है। इसी संघर्ष की अभिव्यक्ति दलित साहित्य में हो रही है। दलित समाज में संघर्ष व चेतना का स्वर फूँकने में दलित साहित्य निरन्तर क्रियाशील है। सामाजिक व राजनीतिक पटल पर हुए अनेक आन्दोलनों ने भी इसकी धार को तेज किया है। (2)

हिन्दी दलित साहित्य

विविध धर्मावलवियों का विशाल देश है भारत। यहाँ हिंदू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी, सिख जैसे कई धर्मों के लोग सदियों से निवास करते आ रहे हैं । पूरे देश में हिन्दुओं की संख्या सबसे अधिक है। शुरू से इनका वर्चस्व रहा है। बहु प्राचीन काल से हिन्दुओं में जटिल वर्ण व्यवस्था प्रचलित है। यह वर्णव्यवस्था वैदिक काल से शुरू हुई थी । उत्तर वैदिक काल आते आते इस व्यवस्था ने काफी जटिल रूप धारण कर लिया। प्राचीन वैदिक कालीन वर्णव्यवस्था ने हिन्दु समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र और वैश्य इन चार वर्णों में विभाजित किया

www.ignited.in

था । इस वर्ण व्यवस्था के अनुसार समाज में ब्राह्मण को श्रेष्ठ त्व प्रदान करने के साथ साथ सामाजिक स्तर पर उन्हें प्रभावशाली बनाया गया। (3) फलतः समय की गति के अनुसार समाज में ब्राह्मणों का प्राधान्य बढ़ने लगा। शुद्रों को इन तीन जातियों के सेवा करने वाला सेवक माना गया । धीरे-धीरे शुद्रों में विविध जाति -उपजातियों की सृष्टि हुई। इन जाति- उपजातियों के लोगों को दलित माना गया ।॥ इन्हें वेदाध्ययन से वंचित किया गया।

वर्ण भेद की यह कुत्सित भावना इतना भयंकर रूप धारण की गई कि निम्नवर्गों के लोगों की छाया का स्पर्श भी पाप समझा जाने लगा। क्रमश: अवहेलित जाति, जनजाति यानी पिछड़े हुए, रौंदे हुए लोगों का जीना दूभर हो गया। वर्णाश्रम पद्धति में शूद्र इस दलित वर्ग में अनुसूचित जाति, जनजाति, मजदूर, भूमिहीन, गरीब किसान सभी को अंतर्भुक्त किया गया। इन सबको दलित माना गया। दलित शब्द का अर्थ - दलित शब्द का अर्थ है, जिसका दलन या उत्पीड़न किया गया हो। दलित शब्द का अर्थ और परित्याजि पर प्रकाश डालते हुए डॉ. आरती झा ने कहा है - दलित शब्द का सामान्य अर्थ है - दरिद्र और उत्पीड़न। इसका अर्य दबा, कुचला, अपमानित और प्रताड़ित प्राणी होता है। (4) आज दलित का अर्थ अनुसूचित जातियों और जन जातियों के रूढ़ अर्थ में होने लगा है। जिसका दलन व दमन हुआ हो, दबाया गया हो, जो उत्पीड़न, शोषित, सताया, गिराया, उपेक्षित, घृणित, रौंदा, मसला, कुचला, विनष्ट, मर्दित, पस्त, हत्साहित और वंचित हो वह दलित है। दलित किसी जाति व धर्म का कोई शब्द नहीं है । वह कोई भी हो सकता है। शुद्र हो, सत्री हो या अन्य कोई भी हो।

दलित साहित्य के प्रेरणा स्रोत

भारतीय समाज में प्रधानत: हिंदू समाज है । छुआछूत की भावना मुख्यत: हिंदुओं में रही है । चार वर्ण की स्थापना तो समाज को जोड़ने हेतु की गई । परंतु कालक्रम में वह बांटने में लग गई । मध्यकाल में निर्गण शाखा के अनेक कवि रैदास, पलटू, कबीर आदि ने वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा पर गंभीर चोट की है । जब् न्हें उपासना का अधिकार न रहा, प्रवेशा धिकार न रहा, तो ईश्वर को मन के भीतर ढूंढ लिया । पा भी लिया । रैदास तो कहते हैं - "का मथरा का द्वारका, का कासी हरद्वार । (5)

"रैदास खोजा दिल अपना, तऊ मिलिया दलदार ।"

गहरे अतीत में जायें तो देखेंगे कि सिद्ध -नाथ कवि इस भेदकारी परंपरा के विरुद्ध खड़े हुए थे । चौरासी सिद्धों में साठ तो शूद्र थे । वैसे ही सिद्धों में अनेक इसी वर्ण के थे । इनकी प्रखर वाणी ने पहली बार समाज में वर्णभेद के प्रति चेतना जगाई । इनके तर्क और समता के उदाहरण समाज को इस नीति में बदलाव के प्रति जागरुक कर सके । आध्यात्मिक भाव को भौतिक उपलब्धि से ऊपर महत्व देने के कारण वे सब को स्वीकार्य हो सके । भेद वाली अवैज्ञानिक भावना के प्रति दलितों को जागृति की प्रेरणा मिली ।

प्रत्यक्ष रूप में स्वामी दयानन्द इस दर्द को समझ कर उन्हें वेदों का अधिकार दिया, यज्ञादि का अधिकार दिया एवं जनेऊ धारण की स्वीकृति दी । उनमें दलितों के प्रति गहरी सचेतननता स्पष्ट दिखी । माता प्रसाद लिखते हैं: संतों के विचारों से दलित जाति को प्रेरणा मिली ।(6)

दलित साहित्य का स्वरूप

दलित साहित्य दलितों में जीवन और उनकी समस्याओं को केन्द्र में रख कर दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य है। वास्तव में देखा जाय तो दलित साहित्य सामाजिक अन्याय के विरुद्ध विद्रोह और आक्रोश है। यदि दलित समस्याओं पर लिखता है तो उसमें सहानुभूति, यदि गैर-दलित लेखक दलित साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए कुछ दलित लेखकों के विचार पर ध्यान देना जरूरी है। दलित साहित्य के स्वरूप का रेखांकन करते हुए कुंवलभारती ने लिखा है -' दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को स्थापित किया है, अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उसीकी अभिव्यक्ति करता है .... यह कला के लिए कला का नहीं बल्कि जीवन का ओर जीवन की जिजीविषा का साहित्य है। " यह कहना तर्क संगत है कि जीवन भर सामाजिक विधि व्यवस्था से पीड़ित अछूत या नीच कहे जाने वाले लोगों में सदियों से संचित विद्रोह की भावना दलित साहित्य में दलितों की लेखनी से भड़क उठी है। (7)

आत्मकथा का उद्भव और विकास

दलित साहित्य की अवधारणा पर अपना विचार विशिष्ट दलित साहित्यकार डॉ. दयानन्द बटोही में

अनुरूप भावना पाई जाती है। उनके शब्दों में - "दलित साहित्य दलितों की चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसमें दलित मानवता का स्वर है। एक नकार है। एक विद्रोह है। यह विद्रोह उस व्यवस्था के प्रति है जो सदियों से दलितों का शोषण कर लाभ की स्थिति में है। दलित साहित्य में गांवों का ज्यादातर वर्णन देखने को मिलता है। हर गांव में दलितों की बस्ती है। दलितों की बस्तियाँ प्रायश: गांव के बाहर ही होती हैं। इनके लिए अलग कूँआ, अलग श्मशान भी होता है। इससे गांव में दलितों के प्रति अन्य सवर्ण जातियों का मनोभाव स्पष्ट हो जाता है| दलित साहित्य शरण कुमार ने हंस पत्रिका में लिखा है - दलित साहित्य का जन्म अस्पृश्यता की कोख से हुआ है।" इसी बात को स्पष्ट करते हुए वे आगे भी कहते हैं कि दलितों की परेशानी, गुलामी, पारिवारिक विघटन, दुःख, गरीबी और उपेक्षापूर्ण जीवन का वास्तविक चित्रत्र करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है| पीड़ा और आह का उदात्त स्वरूप अर्थात् दलित साहित्य है|? दलित साहित्यकारों का मानना है कि एक दलित साहित्यकार ही अपने जीवनाभव को लेकर दलित साहित्य लिख सकता है। दलित साहित्य दलितों को हृदयहीन ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था के भेदभाव से मुक्ति दिलाने के लिए लिखा जाता है। दलितों को आज भी गैर दलित की सहानुभूति एवं करूणा में बहुत कम विश्वास है।

दलित साहित्य आन्दोलन

डॉ. अम्बेडकर के आगमन के साथ ही दलितों में एक बेचैनी-सी उभर आयी थी, जो सम्मान, सत्ता, धन और धरती में अपना हिस्सा चाहते थे। डॉ. अम्बेडकर ने इसी बेचैनी को वाणी और मुम्बई से मूकनायक' (1920) तथा "बहिष्कृत भारत' (1927) नामक अखबार निकाले, इससे दलितों को अभिव्यक्ति के महत्त्व का पता चला।

आधुनिक काल में सर्वप्रथम श्री कमलेश्वर ने सारिका' के दो दलित साहित्य विशेषांक 1975 में सम्पादित कर हिन्दी साहित्यकारों को दलित साहित्य से परिचित करवाया। इसके उपरान्त डॉ. महीप सिंह ने भी संचेतना का एक अंक दलित साहित्य अंक (1980) में सम्पादित किया था जिससे हिन्दी की मुख्य धारा के साहित्यकारों ने इन नयी धारा को आश्चर्य से देखा जबकि इससे पूर्व नियोजक-भीम आदि पत्र-पत्रिकाओं में भी हिन्दी दलित साहित्य छप रहा था। यहाँ तक स्पष्टत: कोई प्रभावी साहित्य आन्दोलन जैसा दिखाई नहीं दे रहा था लेकिन सन् 1980 के आस-पास हिन्दी में एक प्रकार से दलित साहित्य आन्दोलन की शुरुआत हुई।(8)

दलित साहित्य का प्रादुर्भाव

अब तक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि दलित साहित्य का जन्म उत्पीड़न की कोख से हुआ है। आर्यों के बाद भारत के मूल निवासियों और आर्यों के बीच लम्बे समय तक यहाँ के निवासी संघर्ष करते रहे तथा अपनी पराजय के बाद हाशिये पर आ गये और आर्यों का भारत में वर्चस्व स्थापित हो गया। कालान्तर में ऐसे-ऐसे नियम बनाये गये जिनसे मनुष्य का एक बहुत बड़ा समूह को दस्यु से दास फिर अस्पृश्य बना दिया तथा ब्राह्मण वर्ग ने सारा विशेषाधिकार सुरक्षित कर लिया। इस व्यवस्था का विद्रोह गौतम बुद्ध ने किया। उन्होंने पूजा उपासना का अधिकार शूद्रों को ही नहीं बल्कि स्त्रियों को भी दिया तथा बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से लोगों में ज्ञान की अलख जगायी तथा अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया तथा इनके आधार पर बौद्ध साहित्य की रचना की गयी, जिसमें मानव और मानव के बीच जाति, धर्म और वर्ण के आधार पर किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं बरता गया। इसलिए बौद्ध साहित्य दलित साहित्य का प्रेरणा-स्रोत बना। आगे चलकर जब डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया तो पूरा दलित समाज बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुआ। (9)

तेलुगु दलित साहित्य

तेलुगु भाषा में 1990 से दलित साहित्य लेखन की शुरूआत हुई । दलितों की समस्याओं को तेलुगु कविता में प्रतिबिबित करने वाले प्रथम कवि हैं गुररमजाषुवा' । उन्होंने गब्बिलम्' और 'अनाथा' जैसी कविताओं के जरिए समाज में प्रचलित छूआछूत समस्या पर प्रकाश डालकर दलितों में आक्रोश उत्पन्न करने का भरसक प्रयास किया था । जाजुबा के बाद जाला रंगाकवि, कुसुमा धर्मन्व और नक्का चिनवेकाया जैसे दलित कवि अस्पृश्यता के विरोध में कविताएँ लिखने लगे | इनकी कविताओं से तत्कालीन समाज पर काफी प्रभाव पड़ा था । दलितों के मसीहा अम्बेडकर के चिन्तन और आदर्श को महत्व प्रदान करने वाले कवि भीमन्ना ने सामाजिक भेद-भाव को हटाने के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से दलितों में चेतना उत्पन्न की थी। इनकी कविताओं में सामाजिक समानता का स्वर है। तेलुगु भाषा में लिखी

www.ignited.in

गई दलित कविताओं में कवि कत्ति पद्मरगाव की कविता जनजीतम्, देशम् डैरी आदि बहुचर्चित हैं|

आत्मकथा - "जूठन" ओमप्रकाश बालमीकि

सामाजिक सड़ांध को उजागर करने वाले दलित साहित्यकार ओमप्रकाश बाल्मीकि का जन्म 30 जून 1950 को उत्तर प्रदेश के बरला जिले के अन्तर्गत मुजफ्फरनगर में एक चूहड़े परिवार में हुआ था। तत्कालीन समाज में सवर्णों के अन्याय-अत्याचार शोषण पोषण से चूहड़े जैसे असवर्णों का जीना दुभर था। अस्पृश्यता का ऐसा माहौल था कि कुत्ते, बिल्ली, गाय-भैंस का छूना बुरा नहीं था लेकिन चूहड़ों का स्पर्श होते ही पाप लग जाता था। वे सिर्फ जरूरत की वस्तु थे । काम पूरा होते ही उपयोग खत्म। इस्तेमाल करो दूर फेंको' सवर्णों की यह नीति थी । समाज में नीच जाति के लिए शिक्षा पर कोई अधिकार नहीं था। जानबूझ कर उन्हें शिक्षा से वंचित किया जाता था। ओमप्रकाश के पिता छोटनलाल निरक्षर थे। गरीबी से पूरा परिवार छटपटा रहा था । फिर भी बेटे को पढ़ा लिखा कर समाज में प्रतिष्ठित करना पिताजी का लक्ष्य था। गांव के किनारे गन्दगी से भरी भंगी बस्ती में ओमप्रकाश का बचपन बीता था। ऐसी हालत में वे एक विद्रोही चरित्र बनकर सारी प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए पढ़ाई शुरू कर निरन्तर संघर्ष के परिणाम स्वरूप स्नातकोत्तर तक पहुँचे| (10) तत्कालीन समाज चाहता था कि उनके हाथ पर झाड़ू रहे पर कठोर तपस्या ने उन्हें कलम पकड़ा दी। ओमप्रकाश की प्राथमिक शिक्षा गांव में ही हुई। बाद में उन्होंने जबलपुर तथा बंबई से तकनीकी शिक्षा ग्रहण की। भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के उत्पादन विभाग में उन्हें नियुक्ति मिली। वहीं पर विभिन्न भागों में काम करते हुए हिंदी में एम.ए. और साहित्य रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 955 में उन्होंने दलितों के उद्धार के लिए साहित्य सृजन का काम शुरू किया।

दलित जीवन का दस्तावेज : जूठन:

डॉ. अम्बेडकर दलितों के त्राणकर्त्ता माने जाते हैं | मराठी में लिखित उनकी आत्मकथा मी कसा झाले' (मैं कैसे बना) से सबसे पहले दलित साहित्यकारों को आत्मकथा लिखने की प्रेरणा मिली थी। इस संबंध में डॉ. श्यौराज सिह बेचैन ने लिखा है - ' वस्तुत: यह डॉ.अम्बेडकर थे, जिनकी प्रेरणा और प्रभाव से ही आत्मकथा लेखन प्रारंभ हुआ, उन्होंने स्वयं अंतरंग बातें प्रो. सत्यबोध हुदलीकर की डायरी में दर्ज कराई थीं। तत्कालीन मराठी साहित्य की स्थापित पत्रिका नवयुग' के अम्बेडकर विशेषांक (5 अप्रेल 1947) में इसे प्रकाशित किया गया था। पत्रिका में उनकी आत्मकथा का एक अंश प्रकाशित हुआ था। उसके बाद डॉ. अम्बेडकर ने मैं कैसे बना? शीर्षक से आत्मकथा लिखना प्रारंभ किया था (वंचितो के वृत्तान्त) (लेख), जनसत्ता दैनिक, दिल्ली,(25 नवम्बर 2001)।

दलित समाज और उसके सुधार में ओमप्रकाश की भूमिका

हिन्दी दलित साहित्यकारों में ओमप्रकाश बाल्मीकि एक बहुचर्चित नाम है। उनकी आत्मकथा "जूठन' हिन्दी दलित साहित्य में मील का पत्थर मानी जाती है। ओमप्रकाश ने अपनी आत्मकथा के जरिये जहाँ सदियों से चली आ रही असवर्णों के प्रति सवर्णों के मन की भावना में परिवर्तन का प्रयास किया है वहीं समाज में नीच कहे जाने वाली अछूत जातियों में सचेतननता सृष्टि एवं प्राचीन अंधविश्वास, कुसंस्कार आदि हटाकर एक आदर्श सुसंकृत समाज निर्माण का सपना देखा है।

आत्मकथा -'तिरस्कृत' दलित साहित्यकार सूरजपाल चौहान जी का परिचय

हिंदी दलित साहित्यकारों में सूरजपाल चौहान का नाम अलग महत्व रखता है । कवि और कलाकार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त चौहान ने आत्मकथा तिरस्कृत' लिखकर हिंदी दलित साहित्य को और भी समृद्ध किया है। आपका जन्म 20 अप्रेल, 1955 ई. में उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ जिले के फुसावली जनपद में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीरोशनलाल है। लेखक एक संयुक्त परिवार के सदस्य है। उनके घर की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। घर में चाचा और अन्य कई सदस्य थे जो गांव के ठाकुरों के घर में काम -काज करते थे। लेखक भंगी परिवार से थे। गांव के भंगी और चमारों को बसीठों (सवर्णों) की बेगारी करनी पड़ती थी। तत्कालीन जमाने में सरकारी दफ्तरों में भंगियों और चमारों को नौकरी मिलना कठिन था। दूसरी बात सरकारी नौकरी में आने के लिए किसी भी व्यक्ति को शिक्षित होना जरूरी है। दलितों के लिए शिक्षा प्राप्ति एक समस्या बनी थी। स्वातंत्र्योत्तर भारत में धीरे-धीरे इसमें परिवर्तन आने लगा। लेखक के पिता साफ-सफाई का काम करते थे। बाद में उन्हें भारत सरकार के उपक्रम में एक सफाई कर्मचारी के रूप में नियुक्ति मिली और वे वहीं से सेवानिवृत्त हुए| (11)

दलित आत्मकथाएँ और तिरस्कृत

दलित साहित्य के विकास के साथ मराठी दलित साहित्यकारों ने सदियों की जातीयता को समाप्त करने के लिए आत्मकथाओं का सहारा लिया। आत्मकथा के जरिए दलित जाति के लोगों के दुःख-दर्द , कार्यों और विचारों पर प्रकाश डालना उनका मूल उद्देश्य रहा । इन आत्मकथाओं की एक विशेषता यह भी है कि हर एक दलित जाति से किसी न किसी ने अपनी आत्मकथा लिखी है। इन आत्मकथाओं से महाराष्ट्र के हर क्षेत्र की भाव शैली, वेश-भूषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि बातों की जानकारी मिलती है । दलित जाति के आदिवासी, घुमन्त अर्द्ध घुमन्तू लोगों के नित्य के कार्यों और विचारों का चित्रण मिलता है। दया पवार का 'बलुग, लक्ष्मण माने का उपरा', माधव कोंडविलकर का दबोचे गोठण , मुरहरि राव का गबाल, ब्रजनाथ कलसे का 'एरणी च धारणा, उत्तम बंडुतुपे का काटमावरची "पोट' शरणकुमार लिम्बाले का' अक्करमाशी' आदि आत्मकथाएँ महार, मांग, डोर, चमार, कैकाड़ी, जोगी, लुहार, बंजारा, घुमन्तू आदिवासी दलित जातियों की स्थिति को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार मराठी दलित साहित्य मराठी का अविभाज्य अंग हो गया है।

दलित साहित्य: उद्देश्य और वैचारिकता

"दलित साहित्य वह लेखन है, जो वर्ण-व्यवस्था के विरोध में और उसके विपरीत मूल्यों के लिए संघर्षरत मनुष्य से प्रतिबद्ध है। वर्ण-व्यवस्था अर्थात् द्वेष, शत्रुता, मत्सर, तिरस्कार की युद्धभावना। इसके विपरीत मूल्य अर्थात् प्रेम, बन्धुत्व, समता, भ्रातृभावपूर्ण शान्ति और समृद्धि। दलित शब्द से अनेक प्रकार का बोध होता है। जैसे--दुःख-बोध, अपमान बोध, दैन्य-दासत्व बोध, जाति-वर्ग-बोध, विश्व बन्धुत्व- बोध और क्रान्ति बोध। एक अर्थ में आज के सामान्य मनुष्य के जीवन और शूद्र-अस्पृश्य के जीवन में दुःख, दैन्य, अपमान की व्यथा-वेदना भर गयी है। इस दृष्टि से सामान्य मनुष्य, चाहे वह स्पृश्य हो या अस्पृश्य, एक धरातल पर आ गये हैं। किसी हद तक यह काम पूँजीवादी व्यवस्था ने किया है। परिवर्तन दोनों चाहते हैं। पर परिवर्तन करेगा कौन? स्त्री, शूद्र-अस्पृश्यों को सिर्फ राजनीतिक परिवर्तन पर्याप्त नहीं दिखता। उदाहरण के लिए बरतानवी राज गया और स्वराज आया प्रजातन्त्र आया। फिर भी अस्पृश्यता है और है आर्थिक तथा मानसिक विषमता। (12)

निष्कर्ष

भारतीय दलित साहित्य का स्वरूप निश्चित करने से पूर्व हमें उन घटकों की मानसिकता को समझना होगा जिसके द्वारा इस साहित्य का निर्माण हुआ। भारतीय दलित साहित्य डॉ. अम्बेडकर के विचारों पर आधारित है। इसके अलावा प्रत्येक भारतीय भाषा ने अपने यहाँ समता के आन्दोलन निर्माण किए हैं। भारतीय दलित साहित्य में आत्मकथा साहित्य रूप उच्च स्थान लेकर आया है। इसके पहले आत्मकथा को यादों के संग्रह के रूप में देखा जाता था। आत्मकथा समाज जीवन का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। इसका एहसास दलित लेखकों ने करा दिया है। साहित्य की विधा के रूप में आत्मकथा एक प्रकार से उपेक्षित ही था। कुछ समीक्षक तो "कविता और उपन्यास को ही साहित्य मानते थे। मराठी आत्मकथा से प्रेरणा लेकर ही अन्य भारतीय भाषाओं में दलित आत्मकथाओं की शुरुआता होती है। इस कारण भारतीय दलित साहित्य में आत्मकथा का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ

1. विद्यार्थी, ए। "द इम्पैक्ट ऑफ सोशियो-पॉलिटिकल सप्रेशन ऑफ द डाउनट्रोडेन इन रोहिंटन मिस्त्री ए फाइन बैलेंस।" द क्राइटेरियन-एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश, अप्रैल-(2015) वॉल्यूम -6 अंक -2

2. मिन्सी, मैथ्यू। "टचिंग द अनटचेबल्स: ए रिप्रेजेंटेशन ऑफ़ दलित वीमेन इन रोहिंटन मिस्त्री ए फाइन बैलेंस।" द क्राइटेरियन-एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश, दिसंबर-(2015) वॉल्यूम-6 अंक-VI

3. माडवकर, पवन. "भारतीय दलित साहित्य सामाजिक समानता की पहचान के लिए खोज।" मानविकी और सामाजिक विज्ञान की समीक्षा, खंड 3 (2) अप्रैल (2015)

4. मारगथवेल, के. "ह्यूमनिस्टिक अप्रोच इन रोहिंटन मिस्त्री के फैमिली मैटर्स।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च, वॉल्यूम 5, अंक 5, मई-(2014)।

5. दास, मौसमी। "गैर-दलित लेखकों द्वारा दलित की स्थिति।" मानविकी, कला और साहित्य में

अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। खंड-2, अप्रैल (2014)।

6. जैन, श्रुति और अनुज खुसवाहा। "प्रेमचंद का दलित साहित्य में शाश्वत योगदान।" इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च। पैरिपेक्स। खंड: 3, अंक 2, फरवरी (2014)।

7. नायक, रेणुका एल। "प्रेमचंद के गोदान में जाति, लिंग और सत्ता की राजनीति का प्रतिनिधित्व-गाय का उपहार।" जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च सोसाइटी। वॉल्यूम। मैं अंक-I, अक्टूबर (2013)।

8. घोष, तपश्री. "चांडालिका से प्रकृति तक: दलित महिला की मुक्ति और मुक्ति।" खंड 3, अंक I, इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल, फरवरी (2013)।

9. सिंह, संजय "ऐतिहासिककरण 'आवाज विनियोग।" अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रमित और संदर्भित अनुसंधान जर्नल, जुलाई (2012)।

10. श्रीवास्तव, जितेंद्र. भारतीय समाज, राष्ट्रवाद और प्रेमचन्द, सम्यक प्रकाशन, (2012)। (हिन्दी)

11. शेक्सपियर, विलियम। मैकबेथ कैथरीन रोवे और जे.जे.एम. द्वारा संपादित। टोबिन, एंडोवर, सेंगेज, (2012)।

12. राव, अनुपमा. जाति प्रश्न, दलित और आधुनिक भारत की राजनीति, स्थायी काला, (2012)।

Corresponding Author

Pankaj Kumar Singh*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.